an>

Title: Regarding development of Lok Bharti.

डॉ. भारतीबेन डी. श्याल (भावनगर) : अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे शून्यकाल में बोलने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं। आज आपने मुझे एक ऐसी संस्था के बारे में बोलने का अवसर दिया है, जो सचमुच में आज भी गांधी, गांव और कृÂिष को जी रही है। 21वीं सदी में शिक्षण कैसा होना चाहिए, इसके अंतर्गत अंतर्राÂष्ट्रीय कमीशन ने विश्व के 15 अलग-अलग क्षेत्र् के विद्वानों की एक कमेटी बनाई और उन्होंने एक रिपोर्ट 'शिक्षण भीतर का खजाना' करके यूनेस्को के सुपुर्द की। यदि हम इस रिपोर्ट को देखते हैं तो पता चलता है कि गांधी जी ने सालों पहले जो नई तालीम शिक्षा पद्धति का जिक्र् किया है, वही चार शिक्षण के मूल्य स्तंभों को उसमें शामिल किया है। नई तालीम शिक्षा पद्धति का विचार लेकर भावनगर के एक छोटे से गांव में ऋÂिषतुल्य पूज्य नानाभाई भट्ट ने एक संस्था ग्राम दक्षिणा मूर्ति आमला, जिसे नेशनल हैरिटेज स्कूल भी घोÂिषत किया गया है। फिर उच्च शिक्षा के लिए नानाभाई भट्ट, मनुभाई पंचोली (दर्शक), बुचदादा और मूलशंकर भाई भट्ट ने लोक भारती नामक ग्राम विद्यापीठ की स्थापना की। यह बहुत अच्छी संस्था है। मैं पूरे आत्मविश्वास के साथ कहती हूं कि आज मुझे जो सिखाया गया है और मेरे जैसे हजारों स्टूडेंट्स को आमला और लोक भारती ने जीना सिखाया है। लोक भारती एक ऐसी संस्था है, जो ग्राम विद्यापीठ तो है, लेकिन एक ग्रामीण यूनिवर्सिटी से भी अलग कुछ ग्रामीण क्रांति वह करती है और उनकी स्थापना काल में उस वक्त के हमारे आदरणीय राÂष्ट्रपति डा.जाकिर हुसैन और डा.राजेन्द्र प्रसाद जी ने इसकी विजिट की थी और फिर उन्होंने एक राष्ट्रीय प्रवचन में कहा था कि नई शिक्षा पद्धति में हमारा विश्वास मजबूत हुआ है।

मैडम, हमारे आदरणीय पूर्व प्रधान मंत्री जी मोरारजी भाई देसाई भी उनके ट्रस्टी हुआ करते थे। मैं आपके माध्यम से हमारी सरकार, शिक्षा मंत्री और कृÂिष मंत्री जी से अग्रह करना चाहती हूँ कि हमारे देश की संस्कृति और प्रकृति के अनुसार संस्थान को नया बनने की सोच रहे हैं, सालों से यह जो काम हो रहा है, उनको जीवंत रखने के लिए हमारी सरकार कुछ न कुछ मदद करे।

HON. SPEAKER: Shri P.P. Chaudhary and Kunwar Pushpendra Singh Chandel are permitted to associate with the issue raised by Dr. Bhartiben D. Shyal.

Shri Thota Narasimham; now one minute only; not more than that.

...(*Interruptions*)